

राष्ट्रीय शिक्षा मिशन

राष्ट्रीय शिक्षा मिशन को भारत के 2019 अंतरिम केंद्रीय बजट में Mission 385.72 बिलियन (US \$ 5.6 बिलियन) का बजट आवंटित किया गया था। मिशन में चार योजनाएं शामिल हैं। साक्षर भारत, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय मध्यम शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम।

योजनाएं

साक्षर भारत

साक्षर भारत प्रधानमंत्री डॉ। मनमोहन सिंह द्वारा 15 वर्षों और उससे अधिक के गैर-साक्षर और नव-साक्षर शिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से एक साक्षर समाज बनाने के लिए शुरू की गई भारत सरकार की एक पहल है। इसे 8 सितंबर 2009 को केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य महिलाओं की साक्षरता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत के राष्ट्रीय साक्षरता मिशन को पुनर्जीवित करना है, जिसमें 60 मिलियन महिलाओं सहित 70 मिलियन वयस्कों द्वारा साक्षर आबादी में वृद्धि की उम्मीद है। यह स्कूल शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की एक योजना है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन ने कुल साक्षरता अभियान के तहत 597 जिलों, साक्षरता कार्यक्रम के तहत 485 जिलों और सतत शिक्षा कार्यक्रम के तहत 328 जिलों को कवर किया। 2001 की जनगणना के अनुसार, 127 मिलियन से अधिक वयस्कों को साक्षर बनाया गया है, जिनमें 60% महिलाएं, 23% एससी और 12% एसटी थे। साक्षर भारत मिशन ने तेलंगाना राज्य में करीमनगर जिले में लोक शिक्षा समिति के तहत 'आदर्श वयस्क शिक्षा केंद्र' के लिए छह गाँवों को चुना है।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (एनएलएम) 1988 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य अस्सी वर्ष की अवधि में 15 से 35 वर्ष की आयु के 80 मिलियन वयस्कों को शिक्षित करना है। "साक्षरता" से, एनएलएम का मतलब केवल पढ़ना, लिखना और गिनना सीखना नहीं है, बल्कि लोगों को यह समझने में मदद करना है कि वे

वंचित क्यों हैं और उन्हें बदलाव की ओर बढ़ने में मदद कर रहे हैं। [उद्धरण वांछित] भारत में, 15 से 15 वर्ष की आयु के 81% युवा। और सभी वयस्कों के 63% साक्षर हैं, जो 2005 - 2010 के यूनेस्को के अध्ययन पर आधारित हैं।

